गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण ३०

मनुष्य के सभी सद्गुण शुद्ध हृदय से उपजते हैं, और किसी न किसी स्तर पर, हर कोई यह जानता है। जैसे ही तुम कुछ ऐसा करते हो जो उत्थानकारी, उदार या जनहितार्थ होता है तो लोग तुम्हारे हृदय की बात करते हैं। वे कहते हैं, "वह व्यक्ति कैसा स्नेहशील और दयालु हृदय वाला है!" "उसका हृदय कितना उदार है!" "उसका हृदय सोने का है।" "उसका हृदय बड़ा भला है।" वे लोग जिनके आस-पास होने से बड़ा मज़ा आता है, खुशदिल होते हैं; बहादुर लोग शेरदिल होते हैं—क्या तुमने कभी यह वाक्य सुना है? और कुछ लोग आयु में वृद्ध होने के बावजूद हृदय से युवा होते हैं। तुकाराम महाराज कहते हैं, "सन्त का हृदय मक्खन जैसा कोमल होता है।"

यह बात बहुत दिलचस्प है कि अच्छे गुणों का सम्बन्ध प्रायः हृदय से और नकारात्मक गुणों का सम्बन्ध मन से जोड़ा जाता है। उदाहरण के लिए, हृदय अपना काम साधने के लिए कभी भी योजनाएँ नहीं बनाता या षड्यन्त्र नहीं रचता। हृदय कभी अपना फ़ायदा नहीं देखता या दूसरों के कष्ट से उसे सुख नहीं मिलता। हृदय पिघलता है। यह उमड़ता है। इसका स्वभाव ही शुद्ध है और इसका स्वाभाविक रुझान दयालुता, प्रेम, उदारता, वीरता, करुणा, क्षमा, भोलेपन, धार्मिकता और सच्चाई की ओर होता है—ये तो उदाहरण स्वरूप कुछ ही नाम हैं। हृदय भ्रान्तियों से मुक्त है। भ्रान्तियाँ मन की महामारी हैं।

सन्त ऑगस्टीन कहते हैं, "मेरे भगवान के लिए, ज्योति का हृदय। मेरे साथियों के लिए, प्रेम का हृदय। मेरे अपने लिए, लोहे का हृदय।" हृदय की विशालता की इस समझ को ऐसी मशाल बना लो जो सिद्धयोग के पथ पर तुम्हारा मार्गदर्शन करे। "मेरे प्रभु को शुद्ध हृदय प्यारा है।"

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग*, अध्याय ११ "शुद्ध हृदय," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. १६०-१६१।